यहोशू की पुस्तक

अध्याय 4

वाचाई विश्वासयोग्यता

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्बितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय....1
वाचाई चेतावनियाँ....2
संरचना और विषय-वस्तु....2
यहोशू के बुलावे....2
यहोशू का उपदेश....3
मूल अर्थ....6
ईश्वरीय अधिकार....6
परमेश्वर की वाचा....7
मूसा की व्यवस्था का स्तर....7
परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....7
सारा इस्राएल....8
वाचा का नवीनीकरण....8
संरचना और विषय-वस्तु....9
बुलावा....9
उपदेश और प्रत्युत्तर....9
अभिपुष्टि का संस्कार....12
बर्खास्तगी....12
मूल अर्थ....13
ईश्वरीय अधिकार....13
परमेश्वर की वाचा....13
मूसा की व्यवस्था का स्तर....14
परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य....14
सारा इस्राएल....15
मसीही अनुप्रयोग....15
उद्‌घाटन....18
निरंतरता....19
पूर्णता....20
उपसंहार....21

यहोशू की पुस्तक

अध्याय चार

वाचाई विश्वासयोग्यता

परिचय

कल्पना करें कि आप कोई नाटकीय प्रस्तुति देख रहे हैं जिसमें एक चरित्र लगभग सब दृश्यों में प्रमुख भूमिका निभाता है। यह स्पष्ट है कि कहानी में जो वह करता है, वह महत्वपूर्ण है। परंतु अंतिम दृश्य में वह मंच के बीचोंबीच आता है और अपने श्रोताओं को उस पूरे नाटक के बड़े महत्व को समझाता है।

कई रूपों में यहोशू की पुस्तक में यही होता है। पूरी पुस्तक में यहोशू की एक प्रमुख भूमिका है। और जो कुछ वह करता है, वह महत्वपूर्ण है। परंतु अंतिम दृश्यों में वह दो भाषण देता है जिसका प्रयोग हमारे लेखक ने इस्राएल के लोगों के लिए पूरी पुस्तक के बड़े महत्व को प्रकट करने के लिए किया।

यह *यहोशू की पुस्तक* पर आधारित हमारी श्रृंखला का चौथा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक “वाचाई विश्वासयोग्यता” दिया है। इस अध्याय में हम देखेंगे कि कैसे यहोशू की पुस्तक का तीसरा और अंतिम विभाजन इस्राएल को परमेश्वर के साथ उनकी वाचा की शर्तों के प्रति विश्वासयोग्य बनने की बुलाहट देने के द्वारा हमारी पुस्तक के महत्व को प्रकट करता है।

इस श्रृंखला में पहले हमने कहा था कि यहोशू की पुस्तक के मूल अर्थ को इस प्रकार सारगर्भित किया जा सकता है :

> यहोशू की पुस्तक यहोशू के समय में इस्राएल की जयवंत विजय, गोत्रों को उनका भाग देने और वाचाई विश्वासयोग्यता के विषय में लिखी गई थी ताकि बाद की पीढ़ियों के सामने आने वाली ऐसी ही चुनौतियों को संबोधित किया जा सके।

मूल रूप से इस पुस्तक की रचना या तो न्यायियों के समय के दौरान या फिर बेबीलोनी निर्वासन के समय के राजतंत्र के दौरान रह रहे पुराने नियम के इस्राएलियों का मार्गदर्शन करने के लिए की गई थी। यह बताती है कि मूल पाठकों को परमेश्वर के वाचाई लोगों के रूप में अपने शत्रुओं, अपने देश, और अपने अधिकारों तथा अपनी जिम्मेदारियों के साथ कैसे व्यवहार करना था।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में सीखा था, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक को तीन मुख्य विभाजनों में बाँटा। अध्याय 1–12 में उसने इस्राएल की जयवंत विजय पर ध्यान केंद्रित किया। अध्याय 13–22 में उसने अपना ध्यान इस्राएल के गोत्र-संबंधी भागों पर लगाया। और अध्याय 23, 24 में उसने इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता पर ध्यान दिया। इस अध्याय में हम इस अंतिम विभाजन को देखेंगे।

यहोशू की पुस्तक के अंतिम विभाजन में दो मुख्य भाग और एक अंतिम निष्कर्ष पाया जाता है। यह 23:1-16 में एक उपदेश के साथ आरंभ होता जिसमें यहोशू ने इस्राएल के समक्ष वाचाई चेतावनियों को प्रस्तुत किया। फिर यह 24:1-28 में दूसरे उपदेश की ओर बढ़ता है जो वाचाई नवीनीकरण के समय दिया गया, जिसके बाद पद 29-33 में यहोशू की मृत्यु और कई आगामी घटनाओं के वर्णन का संक्षेप निष्कर्ष आता है।

इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता पर आधारित हमारा यह अध्याय तीन चरणों में तीन अंतिम अध्याओं पर ध्यान देगा। सबसे पहले हम यहोशू के पहले उपदेश में उसकी वाचाई चेतावनियों को देखेंगे और फिर इस्राएल के वाचाई नवीनीकरण को देखेंगे जिसमें अंतिम निष्कर्ष पर भी कुछ टिप्पणियाँ शामिल होंगी। अंततः हम अपनी इस पुस्तक के इस भाग के मसीही अनुप्रयोग पर चर्चा करेंगे। आइए हम यहोशू की वाचाई चेतावनियों के साथ आरंभ करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

वाचाई चेतावनियाँ

बाइबल के साथ परिचित प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि पुराने और नए नियम दोनों के लेखकों ने बार-बार अपने पाठकों को परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह न करने की चेतावनी दी थी। परंतु बहुत से सुसमाचारिक लोग ऐसी चेतावनियों की "वाचा" के बाइबल-आधारित विचार के साथ जोड़ने में हिचकिचाते हैं। इसकी अपेक्षा, हम परमेश्वर की वाचाओं को केवल उसकी आशीषों के साथ ही जोड़ने की प्रवृत्ति रखते हैं। अब, हमने इस श्रृंखला में देखा है कि यहोशू की पुस्तक के लेखक ने उस दयालुता की ओर ध्यान खींचा जो परमेश्वर ने इस्राएलियों के प्रति उनके साथ बाँधी गई वाचा के द्वारा दिखाई। परंतु जैसा कि हम अब देखने जा रहे हैं, हमारी पुस्तक का अध्याय 23 उस दंड से संबंधित चेतावनियों पर विशेष ध्यान देता है जो तब आता है जब परमेश्वर के लोग उसकी वाचा का उल्लंघन करते हैं।

हम एक परिचित प्रारूप का प्रयोग करते हुए यहोशू की वाचाई चेतावनियों का अध्ययन करेंगे। पहला, हम इस खंड की संरचना और विषय-वस्तु पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम इसके मूल अर्थ पर ध्यान देंगे, या इस पर कि कैसे इसकी रचना इसके पहले पाठकों को प्रभावित करने के लिए की गई थी। आइए हम इस अध्याय की संरचना और विषय-वस्तु के साथ आरंभ करें।

संरचना और विषय-वस्तु

आपको याद होगा कि यहोशू ने कनान देश के भीतर तक इस्राएल के विजय अभियान की अगुवाई की थी, और उसने दक्षिण और उत्तर में कई अभियानों की शुरुआत की थी। उसने इस्राएल राष्ट्र की एकता को भी बनाए रखा था जब उसने उन्हें यरदन के पूर्वी तथा पश्चिमी ओर अपने-अपने गोत्र-संबंधी भागों में वास करने के लिए भेजा था। परंतु पुस्तक के इस बिंदु पर हमारे लेखक ने उस सभा पर ध्यान केंद्रित किया जो यहोशू ने एप्रैम के क्षेत्र, शायद शीलो में बुलाई थी। इस्राएल वहाँ यहोशू से महत्वपूर्ण निर्देशों को सुनने के लिए इकट्ठा हुआ।

हमारे उद्देश्यों के लिए, इस अध्याय को दो चरणों में देखना सहायक होगा, पहला है, यहोशू के वे बुलावे जो 23:1-2क में पाए जाते हैं।

यहोशू के बुलावे

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यहोशू की पुस्तक में अन्य कई उल्लेख हैं जब यहोशू ने इस्राएल को इकट्ठा किया। परंतु इस बुलावे का वर्णन दर्शाता है कि हमारे लेखक ने इस सभा को यहोशू की पहले की सभाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना।

पहला, हमारे लेखक ने 23:1 में उल्लेख किया कि यहोशू "बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया" था। अब यही अभिव्यक्ति 13:1 में हमारी पुस्तक के दूसरे विभाजन के आरंभ में भी पाई जाती है, परंतु यहाँ हम एक अतिरिक्त टिप्पणी को पाते हैं कि ऐसा "बहुत दिनों के बाद" हुआ था। और इसी भाव में 23:2 में यहोशू ने यह कहते हुए अपना उपदेश शुरू किया, "मैं तो अब बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया हूँ।" और पद 14 में उसने यह तक कहा, "मैं तो अब सब संसारियों की गति पर जानेवाला हूँ।" यहोशू के बहुत आयु के हो जाने पर हमारे लेखक के बल ने दर्शाया कि यह सभा इस्राएल के अगुवे के रूप में उसके अंतिम कार्यों में से एक थी। जिस प्रकार आज लोग मरते हुए व्यक्ति के अंतिम शब्दों पर विशेष ध्यान देते हैं, वैसे ही मूल पाठकों में से प्रत्येक विश्वासयोग्य इस्राएली यह समझ गया होगा कि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी।

दूसरा, 23:2 यह भी दर्शाता है कि "यहोशू सब इस्राएलियों को, अर्थात् पुरनियों, मुख्य पुरुषों, न्यायियों, और सरदारों को बुलवाकर कहने लगा।" ध्यान दें कि यहोशू ने महायाजक या उच्च श्रेणी के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

लेवियों को नहीं बुलाया जो इस्राएल के आम लोगों से अलग ही रहे। इसकी अपेक्षा, उसने ऐसे अगुवों के माध्यम से “सब इस्राएलियों" को संबोधित किया जिनका लोगों के साथ नियमित संपर्क था। यह “पुरनियों, मुख्य पुरुषों, न्यायियों, और सरदारों” की जिम्मेदारी थी कि वे उसे लागू करें जो यहोशू अब कहने जा रहा था। अतः हम देखते हैं कि इस सभा में यहोशू ने ऐसे विषय उठाए जिन्होंने हर दिन और जीवन के हर क्षेत्र में प्रत्येक इस्राएली को प्रभावित किया। परंतु इस सभा के विषय इतना महत्वपूर्ण क्या था? हम इसका उत्तर यहोशू के उपदेश में अध्याय 23 के दूसरे चरण में पाते हैं। पद 2ख-16 में यहोशू ने इस्राएल को परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन करनेवाले को चेतावनी दी।

यहोशू का उपदेश

हमने ईश्वरीय वाचाओं के विषय में किसी अन्य स्थान पर विस्तृत रूप से वर्णन किया है। परंतु संक्षिप्त रूप में कहें तो, ईश्वरीय वाचाएँ उन मुख्य प्रशासकीय नीतियों को प्रकट करती हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने राज्य के लिए स्थापित किया है। हम इन वाचाई नीतियों के महत्वों को तीन मुख्य श्रेणियों में संगठित कर सकते हैं : ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और आशीषों तथा शापों के परिणाम।

जब हम ईश्वरीय उपकार के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में यह बात है कि कैसे परमेश्वर की दयालुता उसकी सब वाचाओं को आरंभ करती है और बनाए रखती है। मनुष्य कभी अपनी योग्यता या अपने बल के द्वारा परमेश्वर के साथ वाचाई संबंध को आरंभ कर या निरंतर जारी नहीं रख पाया है। ईश्वरीय उपकार हमेशा आवश्यक होता है। साथ ही साथ, ईश्वरीय वाचाएँ परमेश्वर के उपकार के बदले हमारे धन्यवादी प्रत्युत्तर के रूप में मानवीय विश्वासयोग्यता की अपेक्षा को भी बढ़ाती हैं। मनुष्यों को हमेशा उस संदर्भ में परमेश्वर को अपनी विश्वासयोग्य सेवा प्रदान करने को कहा गया है जो उसने उनके लिए की है। और पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की वाचाएँ आशीषों और शापों के परिणामों को भी दर्शाती हैं। जब परमेश्वर के लोग उसके प्रति विश्वासयोग्य होते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो वे उसकी भरपूर आशीषों को प्राप्त करते हैं। परंतु यदि वे विश्वासघाती होते हैं और उसकी आज्ञाओं को ठुकरा देते हैं, तो वे उसके शापों का अनुभव करते हैं।

अब बाइबल के लेखकों ने दर्शाया है कि ये महत्व निरंतर ऐसे रूपों में प्रकट होते हैं जो मनुष्यों के लिए बहुत गहरे होते हैं। परमेश्वर का धैर्य और उसकी क्षमा, और साथ ही साथ उसकी कड़ाई और उसका दंड हमें अक्सर चकित करते हैं क्योंकि उसके मार्ग हमारी समझने की क्षमता से बहुत परे होते हैं। बाइबल के लेखकों ने समय-समय पर हमें आश्वस्त किया है कि परमेश्वर हमेशा अपनी वाचाओं के प्रति सच्चा रहता है और वह अगम्य भलाई, ज्ञान और बुद्धि के साथ उनका संचालन करता है।

जैसे कि हम अभी देखेंगे, अध्याय 23 में यहोशू का उपदेश इन तीनों वाचाई महत्वों को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाता है। परंतु प्राथमिक रूप से यहोशू ने शाप के विषय में चेतावनियों पर बल दिया जो परमेश्वर के प्रति गंभीर विश्वासघात के कारण आएँगी।

> जब यहोशू अध्याय 23 में, पहले 16 पदों में लोगों से बात कर रहा है, तो वह वाचा की चेतावनियों के बारे में बात कर रहा है। यहोशू उन्हें विश्वासयोग्य बनने की ईश्वरीय आज्ञा की याद दिला रहा है। पूरी पुस्तक ने वाचा के परमेश्वर के बारे में बात की है; इसने इस परमेश्वर के उपकार के बारे में बात की है, वह परमेश्वर जो युद्ध में लड़ता है, वह परमेश्वर जो विजय प्रदान करता है, वह परमेश्वर जो देखभाल करता है, वह परमेश्वर जो अपनी कृपा उंडेलता है, परंतु सबसे महत्वपूर्ण यह है, वह परमेश्वर जो चाहता है हम विश्वासयोग्य बनें। अतः यहोशू लोगों को आज्ञाकारिता के विषय में और आज्ञा मानने और न मानने के परिणामों के विषय में लोगों को बता रहा है। अन्य किसी भी वाचा के समान और इसमें भी न केवल शक्तिशाली राजा जो एक कमजोर राजा के साथ वाचा बाँधता है, और न केवल

> उस शक्तिशाली राजा का उपकार शामिल है, बल्कि हमारे लिए विश्वासयोग्य होने की आज्ञा, और आज्ञा मानने और न मानने, विश्वासयोग्य बनने और न बनने के परिणाम भी शामिल हैं। परमेश्वर की महानता के विषय में एक पूरी पुस्तक लिखने के बाद — अर्थात् वाचा के उस परमेश्वर के विषय में जो सब कुछ करता है, इसलिए नहीं कि हम इसके योग्य हैं पर इसलिए क्योंकि उसने हमारे साथ वाचा बाँधी है — यहोशू ने लोगों को यह न भूलने की चेतावनी दी कि हमें भी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनना है।
>
> — पास्टर ओर्नान क्रूज़, अनुवाद

यद्यपि यह संभव है कि यहोशू ने इतनी महत्वपूर्ण सभा में और भी बहुत कुछ कहा हो, परंतु हमारे लेखक ने उसके उपदेश को तीन खंडों में सारगर्भित किया। प्रत्येक खंड ईश्वरीय उपकार को याद दिलाने के साथ आरंभ होता है और उसके बाद वाचाई विश्वासयोग्यता, वाचाई परिणामों, या इन दोनों पर ध्यान दिया जाता है।

यहोशू 23:2-8। पद 23:2-8 में पहला खंड इस्राएल के प्रति परमेश्वर के उपकार के दो उदाहरणों के साथ आरंभ होता है। पद 3 में यहोशू ने इस्राएल को याद दिलाया कि उन्हें जयवंत विजय इसलिए मिली क्योंकि "जो तुम्हारी ओर से लड़ता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है।" और पद 4 में यहोशू ने याद किया कि स्वयं परमेश्वर ने "इन बची हुई जातियों को चिट्ठी डाल डालकर तुम्हारे गोत्रों का भाग कर दिया है।"

यहोशू फिर परमेश्वर के प्रति इस्राएल की आभारपूर्ण विश्वासयोग्यता की मांग की ओर मुड़ा। पद 6 में यहोशू ने इस्राएल से कहा कि "बहुत हियाव बाँधकर, जो कुछ मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उसके पूरा करने में चौकसी करना।" इन वचनों ने 1:7 में यहोशू को दी गई परमेश्वर की आज्ञाओं की याद दिलाई। परंतु इन परिचित वचनों के बाद हम एक विशेष प्रकार की विश्वासयोग्य सेवा के प्रति बुलाहट को पाते हैं। इस पुस्तक में पहली बार हम इस्राएल के प्रति यहोशू की इस बुलाहट को पाते हैं कि वे कनानी मूर्तिपूजा और कनानी मूर्तिपूजक समाजों की भ्रष्ट रीतियों से दूर रहें। पद 7 में उसने कहा, "ये जो जातियाँ तुम्हारे बीच रह गई हैं इनके बीच न जाना, और न इनके देवताओं के नामों की चर्चा करना, और न उनकी शपथ खिलाना।" इसकी अपेक्षा यहोशू ने पद 8 में इस्राएल से कहा, "अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति में लवलीन" रहो।

यह कहने की जरूरत नहीं है कि मूर्तिपूजा के विरुद्ध यहोशू का प्रतिबंध नया नहीं था। इसने दस आज्ञाओं में से पहली दो आज्ञाओं और पंचग्रंथ के कई अन्य अनुच्छेदों की याद दिलाई जिन्होंने झूठे देवताओं के भ्रष्ट प्रभावों के विरुद्ध चेतावनी दी थी। परंतु उनका परिचय यहाँ देने के द्वारा हमारे लेखक ने स्पष्ट किया कि यह विषय उन सब बातों के लिए विशेषकर महत्वपूर्ण था जिन्हें उसने अपनी पुस्तक के पिछले अध्यायों में लिखा था। उन सब बातों को ध्यान में रखते हुए जो परमेश्वर ने यहोशू की अगुवाई में अपने लोगों के लिए था, इस्राएलियों की यह जिम्मेदारी थी कि वे अन्य देवताओं की ओर न फिरें।

यहोशू 23:9-13। पद 23:9-13 में यहोशू के उपदेश का दूसरा खंड भी परमेश्वर के उपकार के साथ आरंभ होता है। पद 9 में यहोशू ने इस्राएल को याद दिलाया कि "यहोवा ने तुम्हारे सामने से बड़ी बड़ी और बलवन्त जातियाँ निकाली हैं।" और पद 10 में उसने कहा कि अब भी "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा... तुम्हारी ओर से लड़ता है।"

फिर पहले खंड के समान ही पद 11 में यहोशू ने इस्राएल को विश्वासयोग्यता के साथ प्रत्युत्तर देने को कहा। उसने उन्हें "अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने" के लिए उत्साहित किया। यहाँ यहोशू ने व्यवस्थाविवरण 6:5 की ओर संकेत किया जो सब आज्ञाओं में सबसे बड़ी आज्ञा है। यह चिर-परिचित

पद कहता है, "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।" व्यवस्थाविवरण और यहोशू की पुस्तक में परमेश्वर से प्रेम करने का अर्थ अन्य किसी भी देवता से दूर होकर पूरी तरह से और केवल यहोवा के प्रति समर्पित रहना था।

परंतु अपने उपदेश के इस खंड में यहोशू एक कदम और आगे बढ़ा। यह दर्शाने के लिए कि केवल परमेश्वर के प्रति इस समर्पण को बनाए रखना कितना आवश्यक था, उसने इस्राएल को परमेश्वर के प्रति विश्वासघात के कारण आनेवाले शापों के कड़े परिणामों की चेतावनी दी। जैसा कि उसने पद 12, 13 में कहा, "यदि तुम... यहोवा से फिरकर इन जातियों के बाकी लोगों से मिलने लगो जो तुम्हारे बीच बचे हुए रहते हैं, और इन से ब्याह शादी करके इनके साथ समधियाना रिश्ता जोड़ो, तो... आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा इन जातियों को तुम्हारे सामने से नहीं निकालेगा।" और उसने कहा, "ये तुम्हारे लिये जाल और फंदे... ठहरेंगी, और अन्त में तुम इस अच्छी भूमि पर से... नष्ट हो जाओगे।" परमेश्वर ने उनके लिए जो कुछ किया उसके बावजूद, यदि इस्राएल उन कनानियों के मार्गों का अनुसरण करता है जो प्रतिज्ञा के देश में उनके बीच रह गए थे, तो वे परमेश्वर के कड़े दंड का सामना करेंगे।

कई रूपों में, शापों पर दिया गया यह महत्व असामान्य है। निर्गमन 19:4-6 जैसे अनुच्छेदों में हम वहाँ दी गई भविष्य की आशीषों के सकारात्मक परिणामों को ही देखते हैं। व्यवस्थाविवरण 28 और 30:15-19 जैसे अन्य अनुच्छेदों में आशीषों का प्रस्ताव और शापों की चेतावनी एक दूसरे के साथ-साथ पाए जाते हैं। परंतु यहोशू के उपदेश के इस खंड में उसने केवल *शापों* के भावी परिणामों का ही उल्लेख किया।

यहोशू 23:14-16 पद 23:14-16 में अपने उपदेश के तीसरे खंड में यहोशू ने फिर से परमेश्वर के उपकार के साथ आरंभ किया। पद 14 में हम पढ़ते हैं, "जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही।" यह कथन 21:45 की ओर संकेत करता है जहाँ हमारे लेखक ने ऐसी ही अभिपुष्टि की है। परंतु तीसरे खंड में यहोशू ने विश्वासयोग्यता की बुलाहट के बारे में बात नहीं की बल्कि तुरंत इस्राएल को वाचा का उल्लंघन करने के कड़े परिणामों की चेतावनी दी। पद 23:15 में उसने बल दिया कि परमेश्वर "विपत्ति की सब बातें भी तुम पर लाएगा और तुम को इस अच्छी भूमि के ऊपर से... नष्ट कर डालेगा।" जैसे कि लैव्यव्यवस्था 26 और व्यवस्थाविवरण 4, 28 के अनुच्छेद सिखाते हैं, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह इस्राएल के विनाश और प्रतिज्ञा के देश से निर्वासन के समय की ओर ले जाएगा।

इन खंडों में पाई जानेवाली प्रगति इस उपदेश में यहोशू द्वारा दिए गए मुख्य बल को प्रकट करती है। सबसे पहले, वह इस्राएल को उन शापों के विषय में चेतावनी देना चाहता था जो उन पर तब आ पड़ेंगे यदि वे परमेश्वर की दयालुता के प्रति आभारी नहीं रहते। अब इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यहोशू ने छोटी-मोटी विफलताओं के लिए इन भयानक परिणामों की चेतावनी नहीं दी थी। उसने 23:16 में इस्राएल को चेतावनी दी कि "तुम उस वाचा का, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने... अपने साथ बन्धाया है, उल्लंघन करके पराये देवताओं की उपासना... लगो।" अभिव्यक्ति "उल्लंघन" इब्रानी क्रिया *आबार* (עָבַר) का अनुवाद है। हमारे लेखक ने इस शब्द को गंभीर, विश्वासघाती अपराधों के प्रयोग के लिए रखा था, जैसा कि 7:10, 15 में आकान के विषय में। यहोशू यहाँ छोटी-मोटी गलतियों या अपराधों की बात नहीं कर रहा था। बल्कि उसका अर्थ मूर्तिपूजा के बड़े अपराध से था, या जैसे कि उसने यहाँ कहा, पराये देवताओं की उपासना करने का विनाशकारी पाप।

> पद 23:16 से यह बात स्पष्ट है कि वह लोगों को चेतावनी दे रहा था कि वे जाकर पराये देवताओं की उपासना न करें। अतः इस विषय में यहोवा की वाचा का उल्लंघन करने का अर्थ होगा पहली दो आज्ञाओं को तोड़ देना, और उसका अर्थ होगा वाचा को तोड़ देना। और मूसा ने लैव्यव्यवस्था 26 में वाचा की आशीषों और उसके शापों में लोगों को ऐसा न करने की चेतावनी दी थी, और यही उसने

> व्यवस्थाविवरण 4:25-31 और व्यवस्थाविवरण 28–32 जैसे स्थानों में उनसे न करने का आग्रह किया था। और इसलिए यहोशू अपने शिक्षक मूसा के निर्देश को आगे बढ़ा रहा था। और अब जब लोगों ने प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करके उसे अपने अधिकार में ले लिया है तो वह उनसे आग्रह कर रहा है कि वे आज्ञाओं का उल्लंघन करके यहोवा की वाचा को न तोड़ें। और मूसा ने चेतावनी दी थी कि क्या होगा : ऐसा करने पर वे उस देश से निकाल दिए जाएँगे। और इसलिए एक अर्थ में, यहोशू उनसे यह आग्रह कर रहा है कि वे वाचा का पालन करने के द्वारा इस देश में लंबी आयु को प्राप्त करें।
>
> — डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

यहोशू की वाचाई चेतावनियाँ की मूल संरचना और विषय-वस्तु को मन में रखते हुए, अब हम इस स्थिति में हैं कि इस अध्याय के मूल अर्थ पर चर्चा करें।

मूल अर्थ

सामान्य शब्दों में, उस प्रभाव की कल्पना करना कठिन नहीं है जिसकी आशा यहोशू की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों के लिए की थी। न्यायियों के समय तक इस्राएल ने वाचाई शापों का अनुभव करना शुरू कर दिया था क्योंकि वे कनानी मूर्तिपूजा में पड़ गए थे। राजतंत्र के दौरान अलग-अलग समयों में बाल तथा अन्य देवताओं की आराधना में इस्राएल की सहभागिता के कारण उन्हें उससे भी बड़े कष्टों का सामना करना पड़ा था। और निस्संदेह, जैसे यहोशू ने कहा था, अंततः बेबीलोनी निर्वासन इस्राएल पर आया। हमारा लेखक नहीं चाहता था कि उसके पाठक अपनी बुरी परिस्थितियों का दोष अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की परमेश्वर की विफलता पर लगाएँ, इसलिए उसने बड़ी स्पष्टता से अपने मूल पाठकों को बताया कि उनके कष्ट परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य न बने रहने के कारण आए हैं।

अपने पाठकों को उनकी परिस्थितियों के लिए उनकी जिम्मेदारियों के प्रति आश्वस्त करने हेतु हमारे लेखक ने अपनी वाचाई चेतावनियाँ में पाँच मुख्य विषयों को रखा जिन्हें हमने इस पूरी पुस्तक में देखा है।

ईश्वरीय अधिकार

पहला, यहोशू के बुलावों में उसने सभा के पीछे ईश्वरीय अधिकार को प्रकट किया। पद 23:2क में उसने उल्लेख किया कि *यहोशू* ने लोगों को बुलाया था। जैसे कि हम जानते हैं हमारे लेखक ने बार-बार इस बात पर बल दिया कि परमेश्वर ने यहोशू को मूसा के आधिकारिक उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त किया था। इसलिए यह कहने के द्वारा कि यहोशू ने लोगों को बुलाया था, और फिर यह कि पद 2ख-16 में पाया जानेवाला उपदेश यहोशू ने दिया था, हमारे लेखक ने इन दोनों बातों के पीछे ईश्वरीय अधिकार पर बल दिया।

जैसे कि हम पहले ही संकेत दे चुके हैं, हमारी पुस्तक के इस अध्याय ने एक ऐसे दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया जो मूल पाठकों में से कईयों द्वारा स्वीकार करना कठिन था। बहुत से लोग वाचा का पालन करने की अपनी विफलता के परिणामों की जिम्मेदारी स्वीकार करना नहीं चाहते थे। इसलिए हमारे लेखक ने यह स्पष्ट करने के द्वारा अपने मूल पाठकों के इस संकोच को संबोधित किया कि स्वयं यहोशू ने ये वचन कहे थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

परमेश्वर की वाचा

दूसरा, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यहोशू के उपदेश में वाचा की चेतावनियाँ परमेश्वर की वाचा के विषय के प्रति समर्पित हैं। पद 23:4 में लेखक ने तब परमेश्वर की वाचा की ओर संकेत किया जब उसने यरदन के पश्चिमी भाग का आवरण इस्राएल के "भाग" के रूप में किया। आपको याद होगा कि "भाग" के लिए इब्रानी शब्द — *"नाकालाह"* (נַחֲלָה) — ने उत्पत्ति 15:18 जैसे अनुच्छेदों में कुलपिताओं से शपथ, या वाचा के द्वारा प्रतिज्ञा की गई भूमि को दर्शाया। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि 23:16 में यहोशू ने इस्राएल को यह चेतावनी देने के द्वारा अपने उपदेश को सारगर्भित किया कि "तुम उस वाचा का... उल्लंघन" न करो।

परमेश्वर की वाचा पर हमारे लेखक के ध्यान ने उसके मूल पाठकों को उन बहुत से उपकारों के लिए धन्यवाद अभिव्यक्त करने को कहा जो परमेश्वर ने उन्हें और उनके पूर्वजों को दिखाए थे। और यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो यहोशू ने ईश्वरीय परिणामों के कड़े परिणामों की चेतावनी दी।

मूसा की व्यवस्था का स्तर

तीसरा, यहोशू की वाचा की चेतावनियों ने कई रूपों में मूसा की व्यवस्था के स्तर को प्रकट किया। पद 23:6 में यहोशू के उपदेश में उसने इस्राएल को "जो कुछ मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उसके पूरा करने" की आज्ञा दी। पद 23:11 में यहोशू ने व्यवस्थाविवरण 6:5 में वर्णित मूसा की व्यवस्था से प्रेरणा ली जब उसने इस्राएल को "अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने" की आज्ञा दी। और पद 7 में यहोशू ने इस्राएल को उनके बीच न जाने और न उनके देवताओं की उपासना न करने की आज्ञा दी। इन और पद 8, 12 में इन जैसे समान निर्देशों ने व्यवस्थाविवरण 7:3 और 10:20 जैसे अनुच्छेदों से प्रेरणा प्राप्त की।

हमारे लेखक ने अपने मूल पाठकों को अपनी पुस्तक में बार-बार पाए जानेवाले दृष्टिकोण की याद दिलाने के लिए ध्यान दिया कि कैसे यहोशू ने मूसा की व्यवस्था की ओर संकेत किया था। परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करने की एकमात्र आशा जो उनके पास थी वह मूसा की व्यवस्था के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता की फिर से पुष्टि करना थी।

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

चौथा, यहोशू की वाचाई चेतावनियों का वर्णन करनेवाला यह अध्याय परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर भी ध्यान केंद्रित करता है। उदाहरण के तौर पर, पद 23:1 में यहोशू के बुलावों का विवरण परमेश्वर की महान सामर्थ्य का उल्लेख करता है जब यह कहता है कि "यहोवा ने इस्राएलियों को उनके चारों ओर के शत्रुओं से विश्राम दिया।" यही विषय यहोशू के उपदेश में कई बार पाया जाता है। पद 23:3 में यहोशू ने इस्राएल को याद दिलाया कि "जो तुम्हारी ओर से लड़ता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है।" पद 5 में उसने उन्हें आश्वस्त किया कि "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा [तुम्हारे शत्रुओं को] तुम्हारे सामने से उनके देश से निकाल देगा।" उसने यह कहते हुए पद 9 में इस उद्देश्य को दोहराया, "यहोवा ने तुम्हारे सामने से बड़ी बड़ी और बलवन्त जातियाँ निकाली हैं। और पद 10 में उसने कहा, "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है।" यहोशू ने इस्राएल के विरुद्ध दंड में परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य का भी उल्लेख किया। जैसा कि पद 15 में उसने लिखा, "यहोवा विपत्ति की सब बातें भी तुम पर लाएगा और तुम को... नष्ट कर डालेगा।" और पद 16 में उसने चेतावनी दी, "यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा।"

जैसे कि हम देख सकते हैं, हमारे लेखक ने बार-बार दर्शाया कि कैसे यहोशू ने इस्राएल को परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य की याद दिलाई थी। उसका उद्देश्य था कि यहोशू के वचन उसके मूल पाठकों को धन्यवाद और आशीषों की ओर प्रेरित करें। और इसी भाव में उसने विश्वासघात के कारण

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

आनेवाले अलौकिक शापों की प्रत्येक चेतावनी की रचना की ताकि वे उनके मनों में भय उत्पन्न करें और पश्चाताप की ओर उनकी अगुवाई करें।

सारा इस्राएल

और पाँचवाँ, अध्याय 23 में वाचाई चेतावनियों ने सारे इस्राएल की भागीदारी पर भी बल दिया। यहोशू के बुलावों में पद 2 दर्शाता है कि यहोशू ने "सब इस्राएलियों" को एकत्रित किया। और यहोशू के उपदेश में परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन करने के कारण आए शापों के परिणामों के विरुद्ध उसकी चेतावनियाँ परमेश्वर के केवल *कुछ* लोगों पर लागू नहीं हुईं। इस्राएल के संपूर्ण राष्ट्र का भविष्य उन सिद्धांतों के अनुसार निर्धारित होगा जिनकी घोषणा यहोशू ने इस अध्याय में की थी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यहोशू की पुस्तक के लेखक ने अध्याय 23 में इस मुख्य विषय पर ध्यान केन्द्रित किया कि वह इस्राएल के सब लोगों को उन बातों पर ध्यान देने के लिए प्रेरित करे जो यहोशू ने कही थीं। यहोशू के समय के समान ही हमारे लेखक के समय में भी संपूर्ण राष्ट्र को यहोशू की चेतावनियों पर ध्यान देना था। इसके बाद ही वे परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करने की आशा कर सकते थे।

> परमेश्वर ने इस्राएलियों को उन कार्यों का निर्देश दिया जो उन्हें करने चाहिए और नहीं करने चाहिए... परंतु वे ऐसे पड़ोसियों के मध्य रहने वाले थे जो अन्य भयानक और व्यर्थ रीतियों के द्वारा पराए देवताओं की उपासना करते थे। अतः परमेश्वर चाहता था कि इस्राएली उसके साथ की गई वाचा में विश्वासयोग्य बने रहें। और उसने प्रतिज्ञा की कि यदि वे परमेश्वर के साथ की गई वाचा में विश्वासयोग्य रहते हैं तो उनके साथ सब कुछ अच्छा ही होगा। परंतु यदि वे उसकी वाचा का उल्लंघन करते हैं, तो उनके साथ कुछ गलत होगा। यह बात हमारे जीवनों में भी लागू होती है। यदि हम परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं, तो जैसे परमेश्वर ने यहोशू से प्रतिज्ञा की थी, वह हमारे साथ रहेगा, हमारी अगुवाई करेगा, और हमारे भीतर कार्य करना निरंतर जारी रखेगा।
>
> — पास्टर मीका न्गूसा

अब जैसे कि हमने यहोशू की वाचाई चेतावनियों का वर्णन करने के द्वारा देख लिया है कि कैसे यहोशू की पुस्तक इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता के विषय में चर्चा करता है, इसलिए हम इस अध्याय के दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने की स्थिति में हैं : यहोशू का वाचा के नवीनीकरण का संस्कार

वाचा का नवीनीकरण

कई रूपों में, अध्याय 23 का नाटक हमें असमंजस में छोड़ देता है। यहोशू ने ऐसा उपदेश दिया जिसने इस्राएल को भयानक बातों की चेतवनी दी जो तब होंगी यदि वे परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को तोड़ देंगे। परंतु इस बात का कोई संकेत नहीं है कि इस्राएल ने कैसे प्रत्युत्तर दिया। हमारे लेखक ने उन बातों के लिए अपने पाठकों को तैयार करने हेतु उनके प्रत्युत्तर के किसी भी विवरण को हटा दिया जो वह अध्याय 24 में लिखने वाला था। इस अंतिम अध्याय में यहोशू ने एक दूसरी सभा बुलाई। यहाँ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

नवीनीकरण के संस्कार में इस्राएलियों ने परमेश्वर के साथ बाँधी वाचा का पालन करने में स्वयं को समर्पित किया। और संस्कार उसका आदर्श था कि मूल पाठकों को उन सब बातों के प्रति कैसे प्रत्युत्तर देना था जो उन्होंने यहोशू की पुस्तक से सीखी थीं।

हम वाचा के नवीनीकरण के यहोशू के संस्कार को हमारी सामान्य रीति के अनुसार देखेंगे। हम पहले इसकी संरचना और विषय-वस्तु और फिर इसके मूल अर्थ पर ध्यान देंगे। आइए पहले यहोशू के वाचा के नवीनीकरण की संरचना और विषय-वस्तु पर ध्यान दें।

संरचना और विषय-वस्तु

जैसा कि हम देख चुके हैं, इस्राएल के गोत्रों के अपने-अपने विभिन्न भागों में स्थापित हो जाने बाद यहोशू ने एकत्रित होने के लिए बुलाया, शायद शीलो में। परंतु इस अध्याय में हम एक और सभा को पाते हैं — इस बार शकेम में। शकेम इस्राएल के लिए एक विशेष पवित्र स्थान था। यह वह पहली जगह थी जहाँ उत्पत्ति 12:7 में अब्राहम ने प्रतिज्ञा के देश में परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई थी। और शकेम गरिज्जीम पर्वत और एबाल पर्वत के क्षेत्र में था जहाँ मूसा ने व्यवस्थाविवरण 11, 27 में इस्राएल को परमेश्वर के साथ बाँधी अपनी वाचा को नया बनाने की आज्ञा दी थी। और हमारी पुस्तक के इस अंतिम अध्याय में शकेम वह स्थान है जहाँ हम इस्राएल के अगुवे के रूप में यहोशू की सेवा के अंत में पहुँचते हैं।

शकेम में इस्राएल द्वारा वाचा का नवीनीकरण ऐसा सहज विवरण है जो चार मुख्य भागों में विभाजित होता है। हम पहले 24:1 में सभा के लिए यहोशू के दूसरे बुलावों को पढ़ते हैं। यह बुलावा 24:28 में पुस्तक की समाप्ति पर यहोशू द्वारा सभा की बर्खास्तगी के द्वारा संतुलित किया जाता है। इन दोनों के बीच पद 2-24 में पाए जानेवाले मुख्य विवरण में यहोशू का द्वितीय उपदेश और इस्राएल की प्रतिक्रियाएँ पाई जाती हैं, और इसके बाद पद 25-27 में वाचा को दृढ़ किया जाता है। आइए पहले पद 1 में आरंभिक बुलावे पर ध्यान दें।

बुलावा

इस सभा में यहोशू के बुलावे का विवरण अध्याय 23 के उसके बुलावे के समान भी है और अलग भी। पिछली सभा के समान, पद 24:1 हमें बताता है कि यहोशू ने "इस्राएल के सब गोत्रों" और "इस्राएल के वृद्ध लोगों और मुख्य पुरुषों, और न्यायियों, और सरदारों" को एक साथ बुलवाया। इस बुलावे में जो सबसे महत्वपूर्ण भिन्नता हम देखते हैं वह यह है कि यहोशू और इस्राएल "परमेश्वर के सामने उपस्थित हुए।" दूसरे शब्दों में, वे मिलापवाले तंबू के निकट परमेश्वर की दृश्य महिमा के सामने एकत्रित हुए। यह कई अवसरों में से पहला था जब हमारे लेखक ने निर्गमन 19–24 के साथ इसकी समानताओं को दर्शाने के द्वारा इस घटना के महत्व को प्रकट किया। इन अध्यायों में इस्राएल ने सीनै पर्वत पर परमेश्वर की दृश्य उपस्थिति के समक्ष वाचा बाँधी थी। अतः निर्गमन की पुस्तक के समान ही यहोशू के अधीन वाचा का नवीनीकरण भी परमेश्वर की दृश्य उपस्थिति में हुआ।

उपदेश और प्रत्युत्तर

यहोशू के बुलावे के बाद हमारा लेखक 24:2-24 में यहोशू के उपदेश और इस्राएल प्रत्युत्तर की ओर मुड़ा। सामान्य शब्दों में, यहाँ यहोशू का उपदेश अध्याय 23 की सभा के उपदेश के समान था क्योंकि इसने इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के मूलभूत महत्वों की ओर ध्यान आकर्षित किया : इसने ईश्वरीय उपकार पर ध्यान केंद्रित किया; इसने परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता का आह्वान किया; और इसने विश्वासघात के परिणामों की चेतावनी दी। अध्याय 23 के समान मूर्तिपूजा पर भी अध्याय 24 में विशेष ध्यान दिया गया। परंतु पिछले अध्याय के विपरीत यह अध्याय दर्शाता है कि कैसे इस्राएल ने यहोशू की बातों का प्रत्युत्तर दिया।

इस उपदेश का पहला खंड 24:2-13 ईश्वरीय उपकार की लंबे पूर्वाभ्यास के समान है। आपको याद होगा कि अध्याय 23 में यहोशू ने उन बहुत सी बातों को सारगर्भित किया था जो परमेश्वर ने इस्राएल के लिए की थीं। परंतु यहाँ, अपने शब्दों का इस्तेमाल करने की अपेक्षा यहोशू ने पद 2 में यह कहते हुए आरंभ किया, “इस्राएल का परमेश्‍वर यहोवा इस प्रकार कहता है...।” इन सारे पदों में यहोशू ने वह कहा जो उसने स्वयं परमेश्वर को कहते सुना था, शायद मिलापवाले तंबू में। लगभग अठारह बार परमेश्वर ने प्रथम-पुरुष सर्वनाम “मैं" का प्रयोग करते हुए उसकी घोषणा की जो उसने इस्राएल के लिए किया था। प्रथम-पुरुष का दृष्टिकोण सीनै पर्वत पर इस्राएल की वाचा को दर्शाता है जहाँ मूसा ने उन बातों को बताया जिन्हें उसने सीनै पर्वत पर परमेश्वर को कहते हुए सुना था। और इसने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि स्वयं परमेश्वर प्रत्यक्ष रूप से इस्राएल को अपने अनेक उपकारों की याद दिला रहा था।

परमेश्वर ने इतिहास की तीन अवधियों में इस्राएल के प्रति अपने उपकारों को दोहराया। पहला, पद 3, 4 में परमेश्वर ने याद किया कि कैसे उसने इस्राएल के कुलपिताओं की अवधि में आरंभिक पीढ़ियों के प्रति कृपा दिखाई थी। दूसरा, पद 5-10 में उसने मूसा के समय में अपनी कृपा के बारे में बात की। और तीसरा, पद 11-13 में उसने इसके साथ अंत किया जो यहोशू के समय में इस्राएल के लोगों के साथ हुआ था। पद 12 में परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया कि “यह तुम्हारी तलवार या धनुष का काम नहीं हुआ। और पद 13 में उसने कहा कि उसने उन्हें “ऐसा देश दिया जिस में तुम ने परिश्रम न किया था, और ऐसे नगर भी दिए हैं जिन्हें तुम ने न बसाया था, और... जिन दाख और जैतून के बगीचों के फल तुम खाते हो उन्हें तुम ने नहीं लगाया था।” मुख्य विचार बिलकुल स्पष्ट है। जो इस्राएली परमेश्वर के सामने इकट्ठा हुए, उन्होंने अपनी हर सफलता का श्रेय परमेश्वर के उपकार को दिया।

> मेरा विश्वास है कि कि वाचा के संस्कार में इस्राएल की संतान को सिखाने के लिए एक बहुत ही अद्‌भुत संदेश था। इसका एक पहलू यह देखना है कि वह कैसे इस्राएल के इतिहास में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के विषय में बात करते हुए अपने विदाई के उपदेश को शुरू करता है। वह अब्राहम से शुरू करता है और फिर आगे बढ़ता हुआ अन्य कुलपिताओं के बारे में बात करता है। वह फिर लाल समुद्र के अनुभव की ओर आगे बढ़ता है जहाँ परमेश्वर ने इस्राएल की रक्षा की थी, और फिर जंगल में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के बारे में बात करता है, और अंततः उन्हें जल्दी-जल्दी यह बताता है कि कैसे परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के देश में उन्हें विजय प्रदान की है। और उन्होंने न केवल इन अन्य घटनाओं के द्वारा परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को सुना है, बल्कि उन्होंने इनमें से कुछ घटनाओं को अपनी आँखों से देखा है। और मेरे विचार से इस बिंदु पर जब यहोशू उनके लिए इस ऐतिहासिक अध्याय से होकर जाता है तो वह उन्हें परमेश्वर की विश्वासयोग्यता याद दिला रहा है, कि परमेश्वर अब्राहम से लेकर अपने लोगों के साथ रहा है और वह अब तक विश्वासयोग्य रहा है, इसलिए उन्हें भी विश्वासयोग्य रहना है।
>
> — डॉ. टी. जे. बेट्स

पद 14-24 में यहोशू के उपदेश के दूसरे खंड में यहोशू ने विश्वासयोग्यता की बुलाहट और विफलता के परिणामों की चेतावनी के साथ परमेश्वर की दयालुता पर ध्यान दिया। निर्गमन 19, 24 में मूसा के समान यहोशू ने लोगों से प्रत्युत्तरों की अपेक्षा की और उन्हें पाया भी। यह खंड तीन बुलाहटों और प्रत्युत्तरों में विभाजित होता है।

पहली बुलाहट और उसका प्रत्युत्तर। पहली बुलाहट और उसका प्रत्युत्तर पद 14-18 में पाया जाता है। पद 14 में यहोशू ने इस्राएलियों को उत्साहित किया कि वे “यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई

और सच्चाई से" करें। फिर उसने समझाया कि इस्राएलियों के लिए इस लक्ष्य की ओर पहला कदम उन्हें दूर करना है "जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे।" इसके बाद पद 15 में उसने उनसे कहा कि "आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे।" इस बात के बावजूद भी कि यहोशू ने उन्हें अध्याय 23 के अपने उपदेश में मूर्तिपूजा के विरुद्ध चेतावनी दी थी, फिर भी इस्राएलियों के पास उस समय भी मूर्तियाँ थीं। और अब यहोशू ने बल दिया कि परमेश्वर की मांग थी कि वे अपने बीच से हर मूरत को दूर करके सब झूठे देवताओं को ठुकरा दें। और यहोशू ने 24:15 के उन चिर-परिचित शब्दों को कहने के द्वारा एक उदाहरण को प्रस्तुत किया : "मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।"

परमेश्वर की सेवा करने का यह विषय यहोशू के लिए इतना महत्वपूर्ण था कि उसने इस अध्याय में शब्द "सेवा" या इब्रानी में "अबद" (עָבַד) का प्रयोग सोलह बार किया। और पद 16-18 में इस्राएल ने परमेश्वर की सेवा करने के अपने समर्पण को व्यक्त करने के द्वारा यहोशू की बुलाहट के प्रति सकारात्मक रूप से प्रत्युत्तर दिया। जैसे कि हम पद 18 में पढ़ते हैं, लोगों ने यह उत्तर दिया, "हम भी यहोवा की सेवा करेंगे, क्योंकि हमारा परमेश्वर वही है।"

दूसरी बुलाहट और उसका प्रत्युत्तर। दूसरी बुलाहट और उसका प्रत्युत्तर पद 19-22 में पाया जाता है। पद 19 में यहोशू ने यह कहते हुए सभा को चुनौती प्रदान की, "तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती; क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है; वह जलन रखनेवाला ईश्वर है; वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा न करेगा।" अब यहोशू का अर्थ यहाँ यह नहीं था कि इस्राएल यहोवा की सेवा नहीं कर सकता और कि परमेश्वर हर समयों और परिस्थितियों में उनके विद्रोह और पापों को क्षमा नहीं करेगा। इसकी अपेक्षा, उसने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि जब तक वे इन मूरतों को अपने बीच से दूर नहीं कर देते, तब तक वे परमेश्वर की सेवा करने और परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करने के प्रति समर्पित नहीं हो सकते। भले ही परमेश्वर ने अतीत में बड़े धीरज के साथ इस पाप को नजरअंदाज किया था, पर आगे को वह ऐसा नहीं करेगा। पद 24:20 में यहोशू ने चेतावनी दी कि पराए देवताओं की सेवा करते रहने का भयंकर परिणाम होगा कि परमेश्वर यद्यपि "तुम्हारा भला करता आया है तौभी वह फिरकर तुम्हारी हानि करेगा, और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा।" ख़ुशी की बात यह है की जब लोगों ने इस भयानक चेतावनी को सुना, तो उन्होंने 24:21 में यह कहते हुए प्रत्युत्तर दिया, ""नहीं; हम यहोवा ही की सेवा करेंगे।"

तीसरी बुलाहट और उसका प्रत्युत्तर। तीसरी बुलाहट और उसका प्रत्युत्तर पद 23, 24 में पाया जाता है। पद 18, 21 और 22 में लोगों से सकारात्मक प्रत्युत्तरों को प्राप्त करने के बाद, यहोशू ने पद 23 में फिर से पुष्टि की कि परमेश्वर के प्रति नवीनीकृत विश्वासयोग्यता का पहला बाहरी कार्य "अपने बीच में से पराए देवताओं को दूर करके अपना अपना मन इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर लगाना था।" और इस्राएल ने पद 24 में यह उत्तर दिया, "हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही की सेवा करेंगे, और उसी की बात मानेंगे।"

> यहोशू की पुस्तक के अंतिम अध्यायों — अध्याय 23, 24 — में केवल यहोवा के प्रति विश्वासयोग्यता की आवश्यकता के बारे में यहोशू का उपदेश पाया जाता है। और एक विशेष ध्यान देनेवाली बात आप यहाँ उनके लिए यहोशू की यह ताड़ना है कि वे उन पराए देवताओं को अपने बीच से हटा दें जिनकी सेवा उनके पूर्वजों ने नदी के पार मिस्र में की थी। और यह इस बात की ओर संकेत है कि इस्राएल में हमेशा पराए देवताओं का अनुसरण करने की प्रवृति थी। ए. डबल्यू. टोजर के अनुसार यह मानवीय मन की मूलभूत प्रवृति है कि हमारे मन मूर्तिपूजा के प्रति झुकाव रखते हैं। और यहोशू यह जानता है कि केवल यहोवा, अर्थात् परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता ही न केवल इस्राएल को सफलता प्रदान करेगी बल्कि इससे वे आशीष की भरपूरी का अनुभव करेंगे क्योंकि अन्यजातियों के ईश्वर, जैसे कि

> भजन दर्शाते हैं, मरे हुए हैं, और वे अपने आराधकों को भी अपने जैसे ही बना देते हैं, परंतु केवल एक जीवित और सच्चा परमेश्वर है। और इसलिए, इस्राएल का यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य रहना और केवल उसी के प्रति समर्पित रहना — जैसे यहोवा केवल उनके प्रति समर्पित था — ही भविष्य में उनकी आशा और जीवन और समृद्धि का एकमात्र स्रोत था।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

अभिपुष्टि का संस्कार

यहोशू के उपदेश और इस्राएल के प्रत्युत्तरों के बाद, यह विवरण पद 25-27 में इस्राएल के परमेश्वर के प्रति पाए नए समर्पण की संस्कारात्मक अभिपुष्टि की ओर मुड़ता है। यह खंड हमसे यह कहते हुए पद 25 में आरंभ होता है, “यहोशू ने उसी दिन उन लोगों से वाचा बन्धाई, और... उनके लिये विधि और नियम ठहराए।” पद 26 में यहोशू ने “एक बड़ा पत्थर... बांजवृक्ष के तले खड़ा किया, जो यहोवा के पवित्रस्थान में था,” और इसके द्वारा इस वाचाई समर्पण की अभिपुष्टि भी की।

यहाँ उल्लिखित बांजवृक्ष उत्पत्ति 12:6 और शकेम में मोरे के बड़े वृक्ष की याद दिलाता है। यह वह स्थान था जहाँ अब्राहम ने कनान में अपनी पहली वेदी बनाई थी। और जैसा कि हमने इस पूरी श्रृंखला में देखा है, यहोशू की पुस्तक में स्मृति के लिए अक्सर पत्थरों का प्रयोग किया गया था। उदाहरण के तौर पर पद 4:7 में यहोशू ने गिलगाल में इस्राएलियों के लिए “सदा के लिये स्मरण दिलानेवाले” के रूप में बारह पत्थर खड़े किए। और 22:34 में यरदन के पूर्वी ओर के गोत्रों के द्वारा बनाई गई वेदी इस बात की “साक्षी ठहरी है, कि यहोवा ही परमेश्वर है।” पद 24:27 में यहोशू ने स्पष्ट किया “यह पत्थर... तुम्हारा साक्षी रहेगा, ऐसा न हो कि तुम अपने परमेश्वर से मुकर जाओ।” आने वाली पीढ़ियों में साक्षी का यह पत्थर मूर्तिपूजा को अपने बीच से दूर करने की परमेश्वर से बाँधी इस्राएल की स्वैच्छिक वाचा के इनकार को असंभव बना देगा। और यदि वे इस शपथ को पूरा करने में विफल रहते हैं तो वे परमेश्वर द्वारा दिए गए उस दंड के लिए स्वयं को ही जिम्मेदार मानेंगे जो उन पर आएगा।

बर्खास्तगी

इन गंभीर घटनाओं के बाद इस्राएल के वाचा के नवीनीकरण का विवरण पद 28 में यहोशू द्वारा सभा की बर्खास्तगी के साथ समाप्त होता है। हमारे लेखक ने इस बात पर ध्यान देने के द्वारा इस घटना के विवरण को पूर्ण किया कि “यहोशू ने लोगों को अपने अपने निज भाग पर जाने के लिये विदा किया।” विवरण की इस समाप्ति ने मूल पाठकों के सामने विचार करने हेतु एक महत्वपूर्ण प्रश्न रखा। क्या इस्राएल ने मूर्तिपूजा को ठुकराने और केवल यहोवा की सेवा करने के अपने समर्पण को पूरा किया? पद 24:31 में दिए गए अंतिम निष्कर्ष में जो पुस्तक को समाप्त करता है, हमारे लेखक ने दर्शाया कि “यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे... यहोवा ही की सेवा करते रहे।” परंतु जैसे कि हम न्यायियों, शमूएल और राजाओं की पुस्तकों में देखते हैं, इस्राएल कुछ समय तक तो विश्वासयोग्य रहा परंतु बाद की पीढ़ियों ने मूर्तिपूजा के विरुद्ध ली गई अपनी गंभीर शपथ को तोड़ डाला। और हमारी पुस्तक के मूल पाठक उन परिणामों के विषय में जानते थे जो उन्होंने इसके कारण सहे थे।

यहोशू के वाचा के नवीनीकरण की संरचना और विषय-वस्तु मन में रखते हुए, अब हमें मूल अर्थ की ओर मुड़ना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

मूल अर्थ

मोटे तौर पर, मूल पाठकों के लिए यहोशू के वाचा के नवीनीकरण के अर्थ बहुत स्पष्ट हैं। जिस समय तक हमारे लेखक ने यहोशू की पुस्तक को पूरा किया, उस समय तक इस्राएल के लोग उन समर्पणों को पूरा करने में विफल हो चुके थे जो उनके पूर्वजों ने यहोशू के समय में किए थे। और उनकी अनाज्ञाकारिता के परिणाम बहुत ही स्पष्ट थे। यदि इस्राएल में किसी ने यह सोचा कि उन्होंने इतने अधिक कष्ट क्यों सहे, तो यहोशू 24 समझाता है कि वे अपनी वाचा के घोर उल्लंघनों के कारण परमेश्वर के दंड के योग्य थे।

पहले के एक अध्याय में हमने देखा था कि हमारी पुस्तक के मूल पाठक या तो न्यायियों के समय के दौरान, या राजतंत्र के समय में, या फिर बेबीलोन में यहूदा के निर्वासन के समय के दौरान रहते थे। इनमें से कोई भी समय हो, परमेश्वर के लोगों ने उस वाचा का उल्लंघन करने के कारण बड़े कष्टदायक परिणामों को सहा था जिसका नवीनीकरण यहोशू ने हमारी पुस्तक के 24वें अध्याय में किया था। न्यायियों के समय में इस्राएल के बहुत से लोग मूर्तिपूजा की परीक्षा में पड़ गए थे। और इसके फलस्वरूप इस्राएल राष्ट्र के बहुत से क्षेत्रों ने पराजय और छुटकारे के चक्रों का सामना किया। राजतंत्र के दौरान मूर्तिपूजा ने कई प्रकार की कठिनाइयों की ओर अग्रसर किया। उत्तरी राज्य में अश्शूर की ओर से बार-बार होनेवाले हमलों के कारण शोमरोन का पतन हो गया और अधिकांश लोगों को निर्वासन में जाना पड़ा। बाद में, दक्षिणी राज्य में व्याप्त मूर्तिपूजा ने भी यरूशलेम के पतन और बेबीलोनी निर्वासन की ओर अग्रसर किया। इन सब समयों के दौरान इस्राएल के विश्वासयोग्य लोगों ने यह जानने की इच्छा रखी कि वे परमेश्वर से क्षमा और आशीषों को प्राप्त करने के लिए क्या कर सकते थे। यहोशू 24 ने उन्हें मार्गदर्शन प्रदान किया : इस्राएल को उनके प्रति किए परमेश्वर के दया से भरे अनेक कार्यों को याद रखना चाहिए और उसके साथ अपनी वाचा का नवीनीकरण करना चाहिए। और उन्हें यह कार्य उनके एकमात्र सच्चे परमेश्वर के प्रति ही स्वयं को समर्पित करने के द्वारा करना चाहिए, जैसे इस्राएल ने यहोशू के समय में किया था।

अपने मूल पाठकों को कदम उठाने के लिए प्रेरित करने हेतु हमारे लेखक ने फिर से वाचाई नवीनीकरण के अपने पाँचों आवर्ती विषयों को एक साथ रखा।

ईश्वरीय अधिकार

सबसे पहले, उसने स्पष्ट किया कि इस नवीनीकरण का आधार ईश्वरीय अधिकार था। अध्याय 23 के समान ही, 24:1 का बुलावा इस बात को स्पष्ट करने के लिए यहोशू के नाम का उल्लेख करता है कि परमेश्वर का अधिकार-प्राप्त अगुवा इस संस्कार का प्रभारी था। इसके अतिरिक्त, 24:2 में यहोशू का उपदेश और इस्राएल के प्रत्युत्तर इन शब्दों के साथ शुरू होते हैं, “यहोवा इस प्रकार कहता है...।” ये परिचयात्मक शब्द कोई संदेह नहीं छोड़ते कि इस अध्याय में जो कुछ हुआ उसका आधार परमेश्वर का अधिकार था। और इससे बढ़कर, हमारे लेखक ने यहोशू के उपदेश के विवरण में इस बात को बहुत बार दर्शाया कि यह परमेश्वर का अभिषिक्त प्रतिनिधि यहोशू था जिसने सभा को संबोधित किया था।

इस अध्याय में ईश्वरीय अधिकार की ओर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा हमारे लेखक ने अपने मूल पाठकों में से प्रत्येक व्यक्ति को विशेष रूप से ध्यान देने के लिए बुलाया। यदि वे उसे नजरअंदाज करते जो यहोशू के वाचा के नवीनीकरण में हुआ था और अपना मार्ग ले लेते, तो हमारे लेखक ने बल दिया कि वे परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध विद्रोह करते।

परमेश्वर की वाचा

दूसरा, वाचा के नवीनीकरण के इस पूरे विवरण में यहोशू ने बार-बार परमेश्वर की वाचा की ओर संकेत किया। उसके उपदेश और इस्राएल के प्रत्युत्तरों ने ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और

अनाज्ञाकारिता के परिणामों के महत्वों को स्पर्श किया। और यही नहीं, यहोशू के अभिपुष्टि के संस्कारों में हमारे लेखक ने 24:25 में स्पष्ट रूप से कहा कि "यहोशू ने उसी दिन उन लोगों से वाचा बन्धाई।" हमारे लेखक ने सभा की बर्खास्तगी में भी इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा की ओर संकेत किया। पद 28 में उसने एक बार फिर इब्रानी शब्द "*नकालाह*" (נַחֲלָה) का प्रयोग करते हुए कहा कि "यहोशू ने लोगों को अपने अपने निज भाग पर जाने के लिये विदा किया।"

अब, जैसा कि हमने अभी देखा है, इस अध्याय में परमेश्वर की वाचा का विषय परमेश्वर की दया और विश्वासयोग्यता की मांग पर ध्यान केंद्रित करता है। स्पष्ट रूप से, हमारे लेखक की उसके मूल पाठकों से आशा थी कि वे यह महसूस करें कि कैसे उन्होंने परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया था। और उसने उनसे कहा कि वे परमेश्वर के साथ बाँधी वाचा का पालन करने के अपने समर्पण को नया बनाएँ। पश्चाताप और नवीनीकरण के बिना उन्हें और उनकी संतान को निरंतर वाचा के शापों को सहना पड़ेगा।

मूसा की व्यवस्था का स्तर

तीसरा, अध्याय 24 में यहोशू के वाचा के नवीनीकरण ने मूसा की व्यवस्था के स्तर को स्वीकार किया। उदाहरण के लिए, पद 14, 15 में यहोशू के उपदेश और इस्राएल के प्रत्युत्तरों ने इस्राएल को प्रेरित किया कि वे "जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे" उन्हें और साथ ही साथ "एमोरियों — जो क्नानियों का ही दूसरा नाम है — के देवताओं" को ठुकरा दें। यह निर्देश मूर्तिपूजा की उन निषेधाज्ञाओं पर आधारित था जो व्यवस्थाविवरण 11:28 जैसे अनुच्छेदों में मूसा की व्यवस्था में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, जब यहोशू ने पद 19 में घोषणा की कि "[यहोवा] पवित्र परमेश्वर है; वह जलन रखनेवाला ईश्वर है," तो यहोशू ने पंचग्रंथ के निर्गमन 20:5 जैसे अनुच्छेदों से प्रेरणा ली। हमारे लेखक ने अपने मूल पाठकों के मन में कोई संदेह नहीं छोड़ा। यदि वे परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करना चाहते थे, तो मूसा की व्यवस्था वह मापदंड या स्तर था जिनका उन्हें पालन करना था।

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य

चौथा, वाचा के नवीनीकरण पर आधारित इस अध्याय ने परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर भी बल दिया। हमारे लेखक ने इसे सबसे स्पष्ट रूप से यहोशू के उपदेश और इस्राएल के प्रत्युत्तरों में किया जब यहोशू ने उसका वर्णन किया जो परमेश्वर ने इस्राएल के प्रति अपने उपकार के बारे में कहा था। पद 3-6क में परमेश्वर ने प्रथम पुरुष में बात की और उन अनेक कार्यों का वर्णन किया जो उसने इस्राएल के लिए किए थे। उदाहरण के लिए पद 3 में उसने कहा, "मैं ने तुम्हारे मूलपुरुष अब्राहम को... ले आकर कनान देश के सब स्थानों में फिराया, और उसका वंश बढ़ाया।" पद 5 में उसने कहा, मैं ने... [मिस्र] देश को मारा।" पद 6ख-7 में यहोशू ने उन कार्यों की अपनी व्याख्याओं को जोड़ा जो परमेश्वर ने इस्राएल के लिए किया था। पद 7 में यहोशू ने कहा कि जब मिस्रियों ने समुद्र तक इस्राएलियों का पीछा किया तो परमेश्वर ने "उन पर समुद्र को बहाकर उनको डुबा दिया।" पद 8-13 में वचन का लेख प्रथम पुरुष की ओर लौटता है। पद 8 में परमेश्वर ने कहा, "मैं ने [एमोरियों को] तुम्हारे वश में कर दिया... मैं ने उनका तुम्हारे सामने से सत्यानाश कर डाला।" और पद 12 में कनान पर पाई विजय के संदर्भ में परमेश्वर ने इस्राएल से कहा, "यह तुम्हारी तलवार या धनुष का काम नहीं हुआ।"

इसके अतिरिक्त, यहोशू के शब्दों के प्रति इस्राएल के प्रत्युत्तरों ने परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर ध्यान केंद्रित किया। पद 17 में लोगों ने माना कि मिस्र में परमेश्वर ने , "हमारे देखते देखते बड़े बड़े आश्चर्यकर्म किए" और परमेश्वर ने "जिस मार्ग पर... हम चले आते थे उनसे हमारी रक्षा की।" और पद 18 में उन्होंने स्वीकार किया कि यहोवा ने "हमारे सामने से... सब जातियों को निकाल दिया है।" परंतु

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

यहोशू ने पद 20 में इस्राएल को चेतावनी भी दी, “यदि तुम यहोवा को त्याग [दो]... तो... वह... फिरकर तुम्हारी हानि करेगा, और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा।”

परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य की इन घोषणाओं ने मूल पाठकों को उस परमेश्वर की याद दिलाई जिसकी वे सेवा करते थे। वह सामर्थ्य का परमेश्वर है और उसे कभी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। आशीष और शाप देने की उसकी योग्यता असीमित है। और इस कारण, उन्हें सदैव उसकी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहना चाहिए।

> जब हम इस्राएल के लोगों के साथ परमेश्वर के संबंध को देखते हैं तो यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है कि वह उन्हें बार-बार अलौकिक रूपों में आशीष देता है। और मेरे विचार में उसके पीछे एक वास्तविक उद्देश्य है जो परमेश्वर के साथ उनके संबंध और वाचा के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता को बनाए रखने में उनकी सहायता करता है... मेरे विचार में जो अलौकिक आशीषें वह उन पर उंडेलता है वह लंबे समय के लिए लोगों को निरंतर यह याद दिलाने का एक उत्तम तरीका है कि यह वह परमेश्वर है जो हमसे प्रेम करता है, हमारी देखभाल करता है, जो हमें कभी छोड़ेगा या त्यागेगा नहीं, और उस प्रेम के कारण जो हमने परमेश्वर से प्राप्त किया है, हम वापस मुड़ते हैं और उससे प्रेम करना तथा उस संबंध के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना निरंतर जारी रखते हैं।
>
> — डॉ. डान लैसिक

सारा इस्राएल

पाँचवाँ और अंतिम, यहोशू का वाचा का नवीनीकरण संपूर्ण इस्राएल की भागीदारी के उल्लेखों के साथ आरंभ और समाप्त होता है। पद 1 में यहोशू के बुलावे में “इस्राएल के सब गोत्रों... इस्राएल के वृद्ध लोगों और मुख्य पुरुषों, और न्यायियों, और सरदारों” ने भाग लिया। और पद 28 में यह विवरण यहोशू द्वारा “लोगों को अपने अपने निज भाग पर जाने के लिये विदा” करने की बर्खास्तगी के समाप्त होता है।

सारा इस्राएल उस सभा में आया, वाचा का नवीनीकरण किया और अपने उन निजी भागों में वास करने के लिए चला गया जो परमेश्वर ने उन्हें दिए थे। अपने पाठकों के लिए हमारे लेखक का उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट है। क्योंकि यह यहोशू के समय में ऐसा हुआ था, इसलिए मूल पाठकों में से प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय में भी वाचा को नया बनाना जरूरी था।

वाचाई विश्वासयोग्यता पर आधारित इस अध्याय में अब तक हमने यहोशू की पुस्तक के मूल पाठकों के लिए वाचाई चेतावनियों और वाचा के नवीनीकरण पर ध्यान दिया है। अब हमें इस अध्याय के अपने तीसरे मुख्य विषय, अर्थात् हमारी पुस्तक के इस विभाजन के मसीही अनुप्रयोगों की ओर मुड़ना चाहिए। आज मसीह के अनुयायियों के रूप में हमें इन विषयों को कैसे अपने जीवनों में लागू करना चाहिए?

मसीही अनुप्रयोग

हमारी पुस्तक के अंतिम मुख्य विभाजन ने मूल पाठकों को परमेश्वर के साथ उनकी वाचा के महत्वों पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया, विशेषकर विश्वासयोग्यता की मांगों और उन शापों के परिणामों

पर जिनका सामना वे विश्वासघात के कारण करेंगे। स्वयं यहोशू की दृष्टि में अब्राहम और मूसा के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचाएँ रही होंगी। और पुराने नियम के बाद के पाठकों ने दाऊद के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचा के बारे में भी सोचा होगा। परंतु ये महत्व किस प्रकार आज हमारे साथ बाँधी परमेश्वर की वाचा पर लागू होते हैं?

मसीहियों के रूप में, परमेश्वर के साथ हमारा संबंध मुख्य रूप से उससे संचालित होता है जिसे यिर्मयाह भविष्यवक्ता, यीशु और नए नियम के लेखकों ने "नई वाचा" कहा है। दुखद रूप में, मसीह के कई सच्चे अनुयायियों ने भी नई वाचा को ऐसे रूपों में समझा है जो यहोशू के इस भाग को मसीही जीवन के साथ जोड़ना बहुत कठिन बना देते हैं। इसलिए हमें एक क्षण रूककर उस पर मनन करना चाहिए जो यिर्मयाह ने नई वाचा के बारे में कहा था और कैसे नए नियम के लेखकों ने मसीह में इसकी पूर्णता को समझा था।

सुनिए यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने यिर्मयाह 31:31-32 में क्या कहा :

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बाँधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली (यिर्मयाह **31:31-32**)।

यह अनुच्छेद घोषणा करता है कि बेबीलोनी निर्वासन के बाद परमेश्वर इस्राएल के "घराने" — या "लोगों" — और यहूदा के "घराने" — या "लोगों" — के साथ एक "नई वाचा" — या "नवीनीकृत वाचा" बाँधेगा।

यिर्मयाह ने अपनी सेवकाई का अधिकांश समय यह बताते हुए बिताया कि यहूदा बेबीलोनियों के हाथों पराजय और निर्वासन का सामना करने वाला है। परंतु यिर्मयाह 31 में उसने इस घोषणा के साथ आरंभ किया कि "ऐसे दिन आनेवाले हैं।" इस अध्याय में एक और जगह पाई जानेवाली अभिव्यक्ति "ऐसे दिन आनेवाले हैं" उस समय को दर्शाती है जब बेबीलोनी निर्वासन के बाद इस्राएल पर परमेश्वर की आशीषें उंडेली जाएँगी।

अब इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यह नई वाचा उस वाचा के समान नहीं होगी जो परमेश्वर ने मूसा के समय में उनके पूर्वजों से बाँधी थी। जैसा कि हमने यहोशू 23, 24 में देखा है, यदि इस्राएल पराए देवताओं की ओर मुड़ने के द्वारा परमेश्वर के साथ बाँधी अपनी वाचा का खुला उल्लंघन करता है, तो वे कठिनाइयों के परिणमों और प्रतिज्ञा के देश से निर्वासन के समय का अनुभव करेंगे।

दुखद रूप से, इस्राएल ने परमेश्वर के साथ बाँधी अपनी वाचा को तोड़ा और सैंकड़ों वर्षों तक अन्यजाति के राष्ट्रों के अत्याचार को सहा। परंतु यिर्मयाह ने इस्राएल को यह आशा प्रदान की कि निर्वासन के बाद परमेश्वर दया दिखाएगा और एक नई वाचा को स्थापित करेगा। यिर्मयाह 31:33-34 में परमेश्वर ने निश्चित किया कि यह नई वाचा मूसा के साथ बाँधी वाचा के समान असफल नहीं होगी। यहाँ हम यह पढ़ते हैं :

> मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह **31:33-34**)।

वास्तव में, ये पद स्पष्ट करते हैं कि नई वाचा विफल नहीं होगी क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को पूरी तरह से बदल देगा ताकि वे उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें। वह "अपनी व्यवस्था उनके मन में [समवाएगा], और उसे उनके हृदय पर [लिखेगा]।"

जैसे कि व्यवस्थाविवरण 30:10 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं, परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार हृदयों को बनाना हमेशा से परमेश्वर के लोगों के लिए आदर्श था। और परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा विश्वासयोग्य बचे हुए इस्राएली हमेशा बने रहे जो इस आदर्श की ओर बढ़ते रहे। परंतु यिर्मयाह 31 ने भविष्यवाणी की कि जब नई वाचा पूर्ण रूप से प्रभावशाली होगी तो आत्मिक नवीनीकरण पूरा हो जाएगा — केवल कुछ ही लोगों के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के लोगों में पाए जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए।

यहाँ हम यहोशू के समय से एक महत्वपूर्ण भिन्नता को देखते हैं। जब नई वाचा पूर्ण रूप से प्रभावशाली हो जाएगी, तब परमेश्वर के लोगों से यह कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनें। वे पूर्ण रूप से विश्वासयोग्य होंगे। परमेश्वर "उनका अधर्म क्षमा [करेगा], और उनका पाप फिर स्मरण न [करेगा]।"

> यिर्मयाह में और यहेजकेल में पाई जानेवाली प्रतिज्ञा यह थी कि परमेश्वर व्यवस्था को हमारे हृदय पर लिखेगा और हमें अपने मार्गों में चलने के लिए प्रेरित करेगा, अपना आत्मा हम पर उंडेलेगा, और वह हमारे पापों को क्षमा करेगा। और इसलिए, नई वाचा उस पुरानी वाचा के समान है जिसकी लहू के द्वारा अभिपुष्टि हुई है, परंतु जैसे कि इब्रानियों की पुस्तक स्पष्ट करती है, यह एक श्रेष्ठ वाचा है क्योंकि यह परमेश्वर के अपने पुत्र के लहू के द्वारा बाँधी गई वाचा है, न कि बैलों और बकरों के द्वारा जो अंततः पापों को मिटा नहीं सके। अतः नई वाचा के अधीन जीवन जीना और आशीषों को प्राप्त करना तथा इन बातों को ऐसे स्तर पर जानना अद्भुत है जिन्हें वे पुराने नियम के समयों में शायद नहीं जानते थे।
>
> — पास्टर डोव मक्कानल

यह देखना कठिन नहीं है नई वाचा के विषय में यिर्मयाह का विवरण मसीह के अनुयायियों के रूप में आपके और मेरे लिए महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े करता है। यदि नई वाचा के लोगों को विश्वासयोग्य सेवा के लिए बुलाने की आवश्यकता नहीं है, तो फिर नया नियम आज्ञाकारिता की बुलाहटों से क्यों भरा हुआ है? यदि शापों के परिणामों के विषय में चेतावनियों की आवश्यकता नहीं है, तो फिर नया नियम उन लोगों को चेतावनी क्यों देता है जो मसीह से दूर हो जाने की परीक्षा में पड़ते हैं?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हमें उन बातों की ओर लौटना जरुरी है जो हमने यहोशू की पुस्तक की मसीह की पूर्णता के विषय में इस पूरी श्रृंखला में देखा है। जैसे कि आपको याद होगा, नया नियम सिखाता है कि मसीह इस्राएल की जयवंत विजय और गोत्र-संबंधी भागों के बंटवारे को तीन चरणों में पूरा करता है। उसने इन लक्ष्यों की भव्य पूर्णता को अपने पहले आगमन में अपने राज्य के *उद्घाटन* में आरंभ किया। उसने पूरे कलीसियाई इतिहास में अपने राज्य की *निरंतरता* में उन्हें पूरा करना जारी रखा। और जब वह महिमा में वापस लौटेगा तो अपने राज्य की *पूर्णता* में उन्हें पूरी तरह से पूर्णता में लाएगा। पूर्णता की यह पद्धति इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मसीह इस तीन चरणों में भी वाचाई विश्वासयोग्यता की यहोशू की बुलाहट को पूरा करता है।

हम यह दर्शाने के द्वारा कि नया नियम प्रत्येक चरण में वाचाई विश्वासयोग्यता के बारे में क्या सिखाता है, अपने सामान्य तरीके में यहोशू की पुस्तक के इस अंतिम विभाजन के मसीही अनुप्रयोगों का अध्ययन करेंगे। आइए हम मसीह के राज्य के उद्घाटन में वाचाई विश्वासयोग्यता के साथ आरंभ करें।

उद्घाटन

हम पूरी निश्चितता के साथ जानते हैं कि नई वाचा का युग मसीह के पहले आगमन के साथ आरंभ हुआ। लूका 22:20 में स्वयं यीशु ने “मेरे लहू में... नई वाचा” के बारे में बात की। इब्रानियों 8:6 में हम पढ़ते हैं कि यीशु नई वाचा का मध्यस्थ है। और 2 कुरिन्थियों 3:6 में प्रेरित पौलुस ने अपने और अपने सहकर्मियों का वर्णन “नई वाचा के सेवक" के रूप में किया।

> अंतिम भोज के समय प्रभु यीशु ने सुसमाचारों में स्पष्ट किया कि उसकी बलिदानी मृत्यु का महत्व दो स्तरों पर था। हाँ, यह एक बलिदानी मृत्यु थी जिसमें उसने हमारे बदले हमारे पापों के लिए पवित्र परमेश्वर के क्रोध को सहा ताकि हम उससे बच सकें, परंतु उसने अपनी मृत्यु का वर्णन वाचा का आरंभ करनेवाले बलिदान के रूप में भी किया। वह मत्ती और लूका के सुसमाचारों में बड़े स्पष्ट रूप से कहता है कि उसके लहू ने नई वाचा को आरंभ किया। अतः उसकी मृत्यु वह बलिदान है जो नई वाचा के युग को लेकर आती है।
>
> — डॉ. चार्ल्स एल. क्वार्ल्स

नया नियम ऐसे दो तरीकों को प्रकट करता है जिनमें मसीह ने नई वाचा को आरंभ किया। एक ओर, यह मसीहा के रूप में यीशु के कार्य पर बल देता है। इस्राएल ने उस निर्वासन के अधीन सैंकड़ों वर्ष दुःख सहा था जिसकी चेतावनी यहोशू ने दी थी कि वह उनके विरुद्ध आएगा। और पिता ने पुत्र को उपकार और दया के एक अतुलनीय कार्य के रूप में भेजा। त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व दाऊद के महान पुत्र के रूप में देहधारी हुआ जिसने परमेश्वर के प्रति वाचाई विश्वासयोग्यता की मांग को पूरा किया — और वह भी मृत्यु की दशा तक और उन सबके लिए पापक्षमा का बलिदान बनने तक जो सचमुच उस पर विश्वास करते हैं। इस कार्य के लिए परमेश्वर ने उसे सबके ऊपर सर्वश्रेष्ठ शासक के रूप में पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की आशीषें प्रदान कीं। नया नियम यह भी जोड़ता है कि सच्चे विश्वासी अब इस भाव में “मसीह में” हैं कि वे स्वर्ग के न्यायकक्ष में मसीह के साथ पहचाने जाते हैं। हम महिमा में मसीह के साथ राज्य करते हुए मसीह के साथ बैठाए गए हैं।

परंतु दूसरी ओर, जब यीशु ने अपने राज्य का उद्घाटन किया तो उसके अद्भुत कार्य ने पृथ्वी की कलीसिया को वैसे सिद्ध नहीं बनाया जैसे यिर्मयाह ने नई वाचा के लिए भविष्यवाणी की थी। पहली सदी की कलीसिया में अब भी “झूठे भाई" थे, जैसे कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 11:26 और गलातियों 2:4 में उन्हें संबोधित किया। और यदि वे मन नहीं फिराते तो झूठे भाइयों को परमेश्वर के अनंत दंड को सहना पड़ेगा। परंतु सच्चे विश्वासियों के लिए, हम न केवल “मसीह में" हैं, बल्कि जब हम इस पृथ्वी पर जीवन बिताते हैं तो पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह हम में है। और पवित्र आत्मा विश्वासियों को पवित्रीकरण की जीवनपर्यंत की प्रक्रिया से लेकर जाता है जिसमें हम 2 कुरिन्थियों के अनुसार 7:1 “परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध” करते हैं।

यह पृथ्वी पर की वास्तविकता स्पष्ट करती है कि क्यों यीशु और नए नियम के लेखकों ने पहली सदी के दौरान ऐसे रूपों में वाचा के महत्वों पर बल क्यों दिया जो यहोशू के उपदेशों की उसकी चेतावनियों से मिलते-जुलते थे। जिस प्रकार यहोशू ने इस्राएल की अगुवाई वाचा के नवीनीकरण में की, लगभग वैसे ही यीशु और उसके प्रेरितों ने वचन के नियमित प्रचार और प्रभु-भोज को नई वाचा में वाचा के नवीनीकरण के माध्यम के रूप में स्थापित किया।

उन्होंने बार-बार परमेश्वर के उपकारों को प्रकट किया। परंतु उन्होंने कलीसिया को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ प्रत्युत्तर देने के लिए भी बुलाया। रोमियों 12:2 के जाने-पहचाने शब्दों में

उन्होंने बल दिया कि “इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए।” और उन्होंने अपने समय की दृश्य कलीसिया को भी नियमित रूप से चेतावनी दी कि उन लोगों पर परमेश्वर का दंड आएगा जो मसीह से फिरकर दूर हो जाते हैं। जैसे कि हम इब्रानियों 10:29 में पढ़ते हैं, “तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा और वाचा के लहू को, जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है।” उन वाचाई चेतावनियों के समान ही जो यहोशू ने अपने समय में दी थीं, नए नियम के इन और इन जैसे अनुच्छेदों ने झूठे भाइयों को उद्धार देनेवाले विश्वास की ओर आने के लिए उत्साहित किया। और उन्होंने सच्चे विश्वासियों को परमेश्वर की सेवा में निरंतर बने रहने के लिए उत्साहित किया।

इस प्रकाश में, यह देखना कठिन नहीं है कि कैसे यहोशू की पुस्तक के अंतिम अध्याय के पाँच मुख्य विषय नई वाचा के उद्घाटन पर लागू होते हैं। जब हम यहोशू की पुस्तक के अंतिम विभाजन में ईश्वरीय अधिकार पर दिए गए बल को देखते हैं, तो हम मसीह के पहले आगमन में उसके ईश्वरीय अधिकार के सर्वोच्च प्रकटीकरण को याद करते हैं। जब हम यहोशू की पुस्तक के विवरण में परमेश्वर की वाचा के महत्वों को देखते हैं, तो हम याद करते हैं कि कैसे मसीह ने नई वाचा के महत्वों को प्रकट किया था। मूसा की व्यवस्था के स्तर पर यहोशू द्वारा दिए गए बल से प्रेरित होकर हमारे हृदय मसीह की सिद्ध आज्ञाकारिता की ओर तथा उसके अनुयायियों को दी गई उसकी इस बुलाहट की ओर मुड़ना चाहिए कि वे नई वाचा के प्रकाश में परमेश्वर की व्यवस्था या वचन के अनुसार जीवन बिताएँ। और इस्राएल के प्रति परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर यहोशू के चिंतन हमारी इस ओर अगुवाई करें कि हम मसीह के राज्य के उद्घाटन में प्रकट अलौकिक सामर्थ्य को स्वीकार करें। अंततः यहोशू की पुस्तक के इस भाग में सारे इस्राएल पर दिए गए ध्यान से हमें यह बात याद आनी चाहिए कि कैसे यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने कलीसिया की एकता का आह्वान किया।

वाचाई विश्वासयोग्यता और मसीह के राज्य के उद्घाटन के साथ जुड़े इन मसीही अनुप्रयोगों के बाद, हमें अब इस ओर मुड़ना चाहिए कि कैसे यहोशू की चेतावनियाँ और वाचाई नवीनीकरण की उसकी बुलाहट पूरे कलीसियाई इतिहास के परमेश्वर के लोगों की निरंतरता पर लागू होती हैं।

निरंतरता

जब हम पहली सदी के मसीह के राज्य की तुलना उसके आज के राज्य के साथ करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वर्गारोहित मसीह ने बहुत कुछ पूरा कर लिया है। मसीह द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी पर शासन करने की पिछली दो सहस्त्राब्दियों में उसकी कलीसिया का विस्तार पूरे जगत में अधिकाधिक हो चुका है। और हमारे समय में निरंतर बढ़ती जा रही है। परंतु स्वर्गारोहित मसीह द्वारा अपने शत्रुओं के विरुद्ध प्राप्त विजयों के बावजूद भी वाचाई विश्वासयोग्यता के प्रति अपनी बुलाहट में यहोशू द्वारा दिया गया बल हर युग की कलीसिया पर लागू होता है।

एक ओर, स्वयं मसीह आज भी स्वर्ग में राज्य करता है और स्वर्गीय न्यायकक्ष में अपने लोगों का प्रतिनिधित्व करना जारी रखता है। हम “मसीह में" हैं और परमेश्वर आज भी मसीह की धार्मिकता उस प्रत्येक व्यक्ति को प्रदान करता है जो उस पर उद्धार देनेवाले विश्वास को रखता है ताकि उनकी अनंत आशीषें उसमें सुरक्षित रहें। और इससे बढ़कर, हम जब भी पाप करते हैं तब मसीह परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष हमारे लिए विनती करता है। इब्रानियों 7:25 के अनुसार, “जो {मसीह के] द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।”

परंतु दूसरी ओर, पृथ्वी पर मसीह की कलीसिया आज तक सिद्ध नहीं बनी है। हमें सदैव कलीसिया को इब्रानियों 12:14 के शब्दों की याद दिलानी चाहिए, “उस पवित्रता के खोजी हो जिसके

बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।" आज भी ऐसे लोग हैं जो विश्वास का अंगीकार तो करते हैं परंतु "झूठे भाई" हैं, और उनमें केवल ऐसा विश्वास होता है जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर "पाखंडी" या "अस्थाई" विश्वास कहते है। वास्तव में, कलीसिया में अधर्म समय-समय पर बहुत अधिक बढ़ता गया है, और हम 1 कुरिन्थियों 10:12 जैसी चेतावनियों की घोषणा करने में बिलकुल सही हैं : "इसलिये जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।"

निस्संदेह, परमेश्वर की दया के द्वारा हमेशा सच्चे विश्वासी बचे रहते हैं जिनमें मसीह अपने आत्मा के द्वारा वास करता है। परंतु वे भी परमेश्वर से मिली ताड़ना के रूप में क्षणिक कठिनाइयों से होकर जाते हैं। जैसे यीशु ने प्रकाशितवाक्य 3:19 में लौदीकिया की कलीसिया को समझाया, "मैं जिन जिन से प्रेम करता हूँ, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूँ।"

> परमेश्वर इस संसार में अपने लोगों के लिए ताड़ना को भेजकर अपने प्रेम को प्रकट करता है... इसलिए जब यह अद्‌भुत बात है कि यीशु ने क्रूस पर मरकर अनंत शापों को अपने ऊपर ले लिया, साथ ही यह भी परमेश्वर की ओर से एक अद्‌भुत दान है कि जब हम इस संसार में हैं तो परमेश्वर ने सच्चाई से विश्वास करनेवालों के लिए सब परेशानियों, कष्टों, ताड़ना, और अपनी वाचा के सब शापों को दूर नहीं किया है, क्योंकि यह पवित्रता के मार्गों और धार्मिकता के मार्गों में हमारी अगुवाई करने का उसका साधन और माध्यम है, ताकि आने वाले संसार में हमारी आशीषों की बढ़ोतरी दिन-प्रतिदिन स्पष्ट होती जाए।
>
> — डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

अतः यह स्पष्ट है कि यहोशू की पुस्तक के अंतिम विभाजन के विषय मसीह के राज्य की संपूर्ण निरंतरता में कलीसिया से बात करते हैं। यहोशू की पुस्तक के इस भाग में ईश्वरीय अधिकार आज हमारी कलीसियाओं और हमारे व्यक्तिगत जीवनों पर मसीह के अधिकार की याद दिलाता है। यहोशू की पुस्तक में परमेश्वर की वाचा के महत्व हमें मसीह में नई वाचा के महत्वों को लागू करने की बुलाहट देते हैं, जब हम परमेश्वर के उपकार को मानते हैं, उसके प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं, और उसकी वाचाओं के परिणामों को स्वीकार करते हैं। जब हम मूसा की व्यवस्था के स्तर पर दिए गए यहोशू के बल के बारे में पढ़ते हैं, तो हमें हमेशा मसीह के पूर्ण किए कार्यों के प्रकाश में अपने दैनिक जीवनों की अगुवाई के लिए पुराने नियम और नए नियम दोनों की ओर देखना चाहिए। और जैसे यहोशू ने इस्राएल के प्रति परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य के बारे में बात की, वैसे ही हमें भी उस अलौकिक सामर्थ्य में आनंदित होना चाहिए जिसे परमेश्वर आज भी यीशु के द्वारा अपनी कलीसिया के समक्ष प्रकट करता है। और निस्संदेह, यहोशू की पुस्तक के इस भाग में संपूर्ण इस्राएल पर दिया गया ध्यान हमें बुलाहट देता है कि जब कलीसिया निरंतर पूरे संसार में फैलती जाती है तो हम मसीह में परमेश्वर के सब वाचाई लोगों के बीच एकता को दृढ़ करें।

जैसे कि हम देख चुके हैं, यहोशू की पुस्तक के अंतिम विभाजन का मसीही अनुप्रयोग उस पर ध्यान केंद्रित करता है जो मसीह ने अपने राज्य के उद्‌घाटन और हमारे समय में इसकी निरंतरता में पूरा किया है। परंतु यह उसके राज्य की पूर्णता पर भी लागू होता है जब मसीह इन विषयों को संपूर्ण पूर्णता में लेकर आएगा।

पूर्णता

एक ओर, जब मसीह का महिमा में पुनरागमन होगा तो वह स्वयं अपनी सिद्ध वाचाई विश्वासयोग्यता के कारण नए आकाश और नई पृथ्वी पर अपनी पूरी मीरास को प्राप्त करेगा।

प्रकाशितवाक्य 11:15 में हम पढ़ते हैं कि उस समय "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो [जाएगा], और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" और फिलिप्पियों 2:11 के अनुसार, "और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकर [करेगी] कि
यीशु मसीह ही प्रभु है।"

और दूसरी ओर, जब मसीह का पुनरागमन होगा तब कलीसिया और संसार पूरी तरह से शुद्ध और महिमान्वित किए जाएँगे। परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह से अविश्वासियों ने इस जीवन में जो आशीषें प्राप्त कीं वे उनके अनंत दंड को बढ़ाएँगी। और जिन शापों का उन्होंने इस जीवन में अनुभव किया वे उनके उस अनंत दंड का आरंभ मात्र होंगे जिनका वे सामना करेंगे। परंतु जिन्होंने मसीह में उद्धार देनेवाले विश्वास को रखा है, वे नई सृष्टि में उसके सहभागी होंगे। इस जीवन में प्राप्त उनकी प्रत्येक आशीष उन आशीषों का आरंभ मात्र होगी जो उन्हें मिलेंगी। और ताड़ना के क्षणिक शाप जिनका उन्होंने इस जीवन में सामना किया, उनके लिए बड़े प्रतिफल को उत्पन्न करेंगे। जैसे कि याकूब अपनी पुस्तक के पद 1:12 में कहता है, "धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है ।" उस दिन, नई वाचा की प्रतिज्ञा पूरी तरह से पूर्ण हो जाएगी। जैसे कि हम प्रकाशितवाक्य 22:3 में पढ़ते हैं, "फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे।"

यहोशू की पुस्तक के अंतिम विभाजन के विषय हमें बड़ी आशा प्रदान करते हैं जब हम मसीह के राज्य की पूर्णता की बाट जोहते हैं। यहोशू की पुस्तक के इस भाग में ईश्वरीय अधिकार का प्रकटीकरण हमें याद दिलाता है कि जो आशा हमारे पास मसीह में हैं उसका आधार परमेश्वर का पूर्ण अधिकार है। परमेश्वर की वाचा पर यहोशू का ध्यान देना हमें इस बात से आनंदित होने के लिए प्रेरित करता है कि एक दिन हम मसीह की सिद्ध विश्वासयोग्यता के पूर्ण प्रतिफल में भागीदार होंगे। हम यह जानकार उत्साहित हो सकते हैं कि जब हम नई सृष्टि में मसीह से जुड़ेंगे तो यहोशू की पुस्तक में बल के साथ दर्शाया गया मूसा की व्यवस्था का स्तर परमेश्वर की इच्छा के प्रति हमारी सिद्ध आज्ञाकारिता में पूरा होगा। और इस्राएल के प्रति परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य पर यहोशू का ध्यान देना मसीह की उस सामर्थ्य के अतुलनीय प्रदर्शन पर मनन करने के लिए हमें प्रेरित करता है जिसे हम उसके पुनरागमन के समय देखेंगे। अंततः यहोशू की पुस्तक के इस भाग में प्रकट सारे इस्राएल का विषय हमें इस बात का उत्सव मनाने की बुलाहट देता है कि मसीह के राज्य की पूर्णता के समय नया संसार परमेश्वर के ऐसे लोगों से भरा होगा जो असीमित आनंद के साथ उसकी आराधना और सेवा करेंगे।

उपसंहार

वाचाई विश्वासयोग्यता पर आधारित इस अध्याय में हमने यहोशू की पुस्तक के अंतिम मुख्य विभाजन का अध्ययन किया है। हमने देखा है कि कैसे यहोशू की वाचाई चेतावनियों ने मूल पाठकों को विश्वासयोग्य सेवा प्रदान करने की बुलाहट दी और विश्वासघात के लिए दंड की चेतावनी दी। हमने देखा है कि कैसे इस्राएल के वाचा के नवीनीकरण ने मूल पाठकों को दर्शाया कि कैसे उन्हें अपने समय में भी परमेश्वर के साथ वाचा को नया बनाना है। और हमने ध्यान दिया है कि कैसे यहोशू की पुस्तक के इस भाग का मसीही अनुप्रयोग उन मार्गों पर स्थापित होना चाहिए जिनमें मसीह अपने राज्य के उद्घाटन, निरंतरता और पूर्णता में इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता के लक्ष्य को पूरा करता है।

यहोशू की पुस्तक के अंतिम विभाजन ने इसके मूल पाठकों के लिए पूरी पुस्तक के भव्य महत्व को प्रकट किया। परमेश्वर ने अपने लोगों को जयवंत विजय के साथ आशीषित किया था और इस्राएल के

गोत्रों को उनके चिरस्थाई भाग प्रदान किए थे। और ईश्वरीय उपकार के इन प्रदर्शनों का लक्ष्य था कि वे हमारी पुस्तक के मूल पाठकों की वाचाई विश्वासयोग्यता के साथ प्रत्युत्तर देने में अगुवाई करें। परमेश्वर का दंड उन लोगों के विरुद्ध आएगा जो विश्वास और सेवा के साथ उसके प्रति उत्तर देने में विफल रहते हैं। परंतु उन लोगों के लिए एक बड़ा प्रतिफल रखा है जो विनम्र भक्ति के साथ परमेश्वर की दया के प्रति उत्तर देते हैं। और यह आप पर और मुझ पर भी लागू होता है। मसीह में हमने परमेश्वर के अनुग्रह के महानतम प्रदर्शन को देखा है। परमेश्वर मसीह में नए आकाश और नई पृथ्वी में अनंत विजय और अनंत मीरास प्रदान करता है। और यह दान उन सब में पूरा होगा जो उद्धार देनेवाले विश्वास के साथ उद्धारकर्ता के पास आते हैं।